हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-१ अगस्त, २००९

सम्पादकीय

भारतीय स्वतंत्रता के ६२ वर्ष

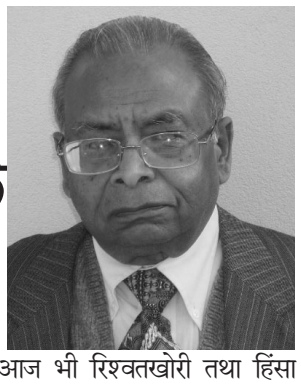

पिछले ६२ वर्षों में भारत ने कई क्षेत्रों में अच्छी प्रगति की है। आर्थिक दृष्टि से, अधिकांश लोगों की स्थिति सुधरी है यद्यपि कि सूखा पड़ने के कारण किसानों को काफ़ी क्षति उठानी पड़ी है। आतंकवाद का सामना भारत काफ़ी समय से करता आया है परंतु अब आतंकवाद एक नये रूप में उभर कर सामने आया है और भारत तथा विश्व के लिये एक चुनौती है। जलवायु-परिवर्तन भी एक और चुनौती है, जिसे हल करने का उत्तरदायित्व केवल विकसित देशों पर नहीं डाला जा सकता, भारत को इस सम्बन्ध में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। यद्यपि कि साक्षरता की दर में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है तथापि गाँवों में एक बड़ी संख्या में बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। भारतीय संसद ने हाल ही में, ६ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिये मुफ़्त शिक्षा का नियम पारित करके अच्छा कदम उठाया है। पर केवल क़ानून पास कर देने से यह काम पूरा नहीं हो जायेगा। इसके लिये उपयुक्त संसाधनों का प्रवधान करना होगा और सामाजिक मान्यताएँ बदलनी होंगी और बाल-मज़दूरी को समाप्त करना होगा। पिछले ६२ वर्षों में भारत की सैनिक शक्ति में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है और प्रजातंत्र की जड़ें मज़बूत हुईं हैं। पर देश में आज भी रिश्वतखोरी तथा हिंसा का (विशेषकर राजनीतिज्ञों की छत्रछाया में हिंसा) बोलबाला है। पश्चिमीकरण बहुत तेज़ी से हो रहा है और पुराने सामाजिक ढाँचे धीरे-धीरे टूटते नज़र आ रहे हैं। दलितों की दशा में परिवर्तन हो रहा है। संक्षेप में भारत प्रगति की और अग्रसर है पर उसके सामने कई नई चुनौतियाँ हैं। सभी पाठकगणों को भारत की ६२वीं वर्षगाँठ पर बहुत-बहुत बधाई।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में काव्य-कुंज में श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी तथा रक्षा-बंधन आदि पर कुछ कविताएँ हैं, 'एक दुनिया - अनेकों संस्कृतियाँ' नामक रोचक लेख हैं, कहानी 'समय शेष' का सातवाँ व अन्तिम भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

त्रुटि-संशोधन- जुलाई २००९ के अङ्क में, 'आधुनिक मेनका' कविता के लेखक का नाम मनीष डब्बास होना चाहिये था न कि राजेन्द्र चोपड़ा। इस त्रुटि के लिये हमें खेद है।

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर दो कविताएँ

- इन्दुमती पाण्डेय, मेल्बर्न

(१) कारागृह धन्य भयो
(राग-पीलू-त्रिताल)

कंस कारागृह, धन्य भयो ॥
ब्रह्म-अनादि-अनन्त-अगोचर, नर तनु धरि प्रकट्यौ ॥

साधु-जनों का परित्राण, अति दुष्टों का संहार,
करने हेतु धर्म-संस्थापन, लिया मनुज अवतार,
तिथि अष्टम, नक्षत्र रोहिणी, भाद्रमास अंधियार
मध्यरात्रि बुधवार, जगतपति, मानव रूप धर्‌यो ॥
कंस कारागृह .....

सहसा सुर दुंदुभी बज उठी, नभ में स्वयं प्रताप,
सुनकर जन्म अजन्मा का, मिट गया विश्व-संताप,
ज्योति जली जग-मग कारागृह, फैला दिव्य प्रकाश,
श्री वसुदेव-देवकी हर्षित, मन अति चकित भयो ॥
कंस कारागृह .....

रूप चतुर्भुज, शंख-चक्र अरु, गदा पद्म धरे
शोभित श्याम-नील-अम्बुज-तनु पीताम्बर प्यारे,
वक्ष: स्थल श्रवित्स, कंठ, कौस्तुभमणि माल रसाल,
दिया पुरातन-परिचय'हरि' ने दम्पति हिय उमंग्यो ॥
कंस कारागृह .....

बनि शिशु प्रभु ने कहा "मुझे पहुँचावो गोकुल गाँब"
मेरा अंश 'योगमाया' को, लै आवहु एहि ठाँव",
तुरत खुल गये सारे बन्धन, प्रहरी हुए अचेत,
जमुना पार करत 'रवितनया', चरण सपर्श दियो ॥
कंस कारागृह .....

'जीवन-मूल' बदल हरिमाया' ले आए वसुदेव,
बन्द हो गये द्वार सभी पुनि, जकड़ै बन्ध अनेक'
शिशु- रोदन सुन प्रहरी जागे, गये कंस दरबार,
दौड़ पड़ा असि ले पल भर में, अष्ट भुजा प्रकट्यौ ॥
कंस कारागृह .....

उमड़ पड़ी रसमय सरिता, लीला सुख यशुदा द्वार,
माखन चोरी, गोचारण, रस-रास-रंग विस्तार,
सहज कृपावश किया कंस का, मथुरा में संहार,
'पार्थ सारथी' बने, विश्व को, गीता ज्ञान दियो ॥
कंस कारागृह .....

(२) प्रकट भयो कारागूह
(राग-झिंझौटी-ताल-दादरा)

प्रकट भयो, कारागृह, रसिक ब्रज-बिहारी,
अव्यय-अविकारी-अज, लीला वपु-धारी ॥

हरन विषम भूमि-भार, करन दुष्ट-खल संहार,
सुर-नर-मुनि, दु:ख हरन, मानव-तनु धारी
प्रकट भयो.....॥

त्रिभुवन जय, गूँज उठी, दुंदुभि नभ बीच बजी,
गोकुल के, भाग्य को सराहत नर-नारी
प्रकट भयो.....॥

माखन-दधि-दूध की, मटुकियाँ लै गोपी ग्वाल,
जुटत नचत नन्द भवन, सुषमा अति न्यारी
प्रकट भयो.....॥

आनन्द, अपार भयो, कुडर- दु:ख-शोक गयो,
गोकुल तो, अतुल भयो, प्रकटे अविकारी
प्रकट भयो.....॥

मोहन मुख छवि निहारि, तरि गये, भवसिन्धु वारि,
कजरारे नयन, मोर-मुकुट छवि, मुरारी
प्रकट भयो.....॥

पीत-वसन, कटि-किंकणि, मुक्ताहार, कौस्तुभ मणि,
मत्त भ्रमर अलकें, मधुपान करत प्यारी
प्रकट भयो.....॥

दरस-परस, सुख अपार, उतर्‌यो, जग-मोह भार,
तन मन सब, दिये वार, गोकुल, ब्रज-नारी
प्रकट भयो.....॥

रक्षा बंधन का त्योहार

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

एक साल में
कम से कम दो बार
अपनी बहना के घर जाना
और देख कर आना
क्या सुखी तो है
अपने ससुराल में तुम्हारी बहना
ये सीख है हजारों वर्ष पुरानी
अपने पूर्वजों का दिया सुंदर गहना

उन में से एक है राखी की रीति
याद रखना मत भूलना रिश्तों की प्रीति
सूत के धागे की कच्ची डोरी
भईया मैं बांधती हूँ कलाई पर तोरी
अगले साल फिर आना, ख़बर लेना मोरी

क्या सोच, समझ और सीख थी
रण में जाते समय शूरवीरों की बहनें
भाईयों की सलामती की मांगती भीख थी
ये रीति भाई-बहना के प्यार की प्रतीक थी
बीते युगों मानव और मानवता की जीत थी

आधुनिकता के नाम पर आज इंसान बदला है
पैसे के लिए सब कुछ करने पर तुला है
अपनों के पास रहते हुए भी अकेला है
राखी तो क्या वह हर त्योहार भूला है
माना बसा दूर देश पर, अपना क्यों भूला है

बहिनें आज के दिन इंतज़ार करती हैं
खुद न सही शायद फ़ोन ही आ जाए
या भईया का पत्र से पैगाम आ जाए
हर साल न सही कभी-कभार आ जाए
राजन भईया आकर राखी बंधवा जा
तो बहना की जान में जान आ जाए।

एक दुनिया - अनेकों संस्कृतियाँ (भाग ३ -अंतिम)

-शिंजिनी एलावादी, भारत

(इस लेख के पहले भाग में आपने तीसरी संस्कृति के बारे में पढ़ा और जाना कि ऑस्ट्रेलिया में विद्यार्थियों को कितनी स्वतंत्रता होती है। इसके विपरीत, भारत में बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है जिससे बच्चों में तनाव बढ़ता है लेख के दूसरे भाग में आपने ऑस्ट्रेलियाई जीवन के बारे में लेखिका के विचार पढ़े जिन में आस्ट्रेलियाई फ़ैशन व किशोरों के जीवन में दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष का वर्णन था और बताया गया था कि किस प्रकार किशोर अपने बड़ों का सममान करते हुए अपने जीवन का आनंद भी उठाते हैं। लीजिये प्रस्तुत है, इस लेख का शेषांश - सम्पादक)

भारतीय समाज को ऑस्ट्रेलियाई समाज की तुलना में संकुचित नहीं माना जा सकता क्योंकि बदलते समय के साथ भारत के दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई आदि बड़े शहरों के लोगों की सोच में एक बदलाव उभरता दिखाई दे रहा है। वे अब पुराने ज़माने के समान रुढ़िवादी नहीं रहे। यह हम ऑस्ट्रेलिया में रह कर कभी जान नहीं पाये क्योंकि हमने उनके विचारों का कभी प्रत्यक्ष रूप से अनुभव ही नहीं किया। आज दिल्ली में रहते हुये भी, मैं वैसा ही जीवन व्यतीत करती हूँ जैसा ऑस्ट्रेलिया में किया करती थी। मैं यहाँ भी अपने दोस्तों के साथ बाहर घूमने, सिनेमा देखने, खाने-पीने जाती हूँ पश्चिमी वस्त्र भी पहन कर बाहर जाती हूँ जब कभी कोई रस्म रिवाज़ मुझे ग़लत या प्रतिबंधित करने वाले लगते हैं तो अपने सगे-सम्बधियों के सामने मैं उनका विरोध भी करती हूँ। ऑस्ट्रेलिया में हमें बहुत स्वतंत्रता का अनुभव होता है परन्तु वहाँ रह कर मैंने यह भी सीखा है कि उस स्वतंत्रता का हम लाभ उठायें या दुरुपयोग करें, यह अपनी अपनी सोच पर निर्भर करता है।

मैंने भारत, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, दक्षिण कोरिया जैसे विश्व के अनेक देशों में रह कर 'तीसरी संस्कृति' से जुड़े रहने का अवसर पाया है। परन्तु ऑस्ट्रेलिया में रहने का अनुभव अन्य देशों से बिल्कुल भिन्न था। इस अनुभव ने मुझे भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के सकारात्मक पहलुओं को स्वयं में समेट कर संतुलित जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। इस अनुभव का अवसर पा कर मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ।

(समाप्त)

कहानी

समय शेष (भाग ७ -अंतिम)*

- युगल

(इस कहानी के पिछले भागों में आपने पढ़ा कि दूध लेने के स्थान पर किस प्रकार दशरथ बाबू की एक वृद्ध महिला से भेंट हुई। एक बार, जब कई दिन तक दशरथ बाबू नहीं दिखे तो एक दिन सुमित्रा उनके घर पहुँच गई। पता चला कि वे गाँव गये हुए हैं, पता नहीं कब तक लौटें। बातचीत के दौरान, दशरथ बाबू की बहू, निनी ने सुमित्रा को बताया कि दशरथ बाबू के रिटायर होने के दो वर्षों बाद ही उनकी पत्नी चल बसी थीं। कुछ दिनों बाद, सुमित्रा का दूध लेने आना बंद हो गया। एक सांझ सुमित्रा दशरथ बाबू के घर आ गईं। कुछ देर तक तो वह टी०वी० देखती रहीं फिर निनी के पास रसोईघर में गुमसुम बैठी रहीं। निनी ने पूछा भी कि कुछ हुआ है तो दीर्घ साँस लेती हुई बोलीं- "अब क्या होना हवाना है, बेटी! होना तो यही है कि मेरी अर्थी उठे।" लीजिये अब कहानी का शेषांश पढ़िये -सम्पादक।)

निनी ने इतना समझ लिया कि अन्दर बहुत भरा है, जरा-सी सुई चुभी कि सब रिस-रिसकर बाहर आ जाएगा। उसने सुमित्रा के आगे चाकू और परवल रख दिए। सुमित्रा धो-धोकर परवल काटने लगीं।

तभी दशरथ बाबू चौखट पर आ खड़े हुए,"आप अभी तक यहीं अटकी हैं। घर के लोग चिंतित होंगे!"

सुमित्रा बुदबुदाई-"न कोई घर है और न कोई चिंता करने वाला है।"

पता नहीं, दशरथ बाबू ने वह सब सुना या नहीं। निनी सब भाँप गई। बोली- "आप घर से रूठ कर आई हैं? लेकिन रात में उन लोगों की गैरहाज़िरी में यहाँ रुक जाना क्या उचित होगा?"

सुमित्रा कुछ क्षण बैठी रहीं। फिर उठकर खड़ी हो गईं - सन्नद्ध और दशरथ बाबू के पीछे हो लीं।

आगे जाकर सड़क के दोनों ओर वीपिंग अशोक के उँचे-उँचे वृक्ष कतार में खड़े थे। हवा में हिलते उनके पत्ते बंगलों से आती रोशनी को बाधित कर रहे थे। इससे नीम अंधेरा-जैसा था। दशरथ बाबू ने पूछा,"क्वार्टर किधर है?"

सुमित्रा ने कातर भाव से दशरथ बाबू का दाहिना हाथ थाम लिया। अनुनयपूर्वक बोलीं-"मुझे उस नरक में क्यों भेज रहे हैं! मुझे किसी वृद्धा आश्रम में रखवा दीजिए।"

आज के पहले सुमित्रा ने कभी प्रकट नहीं किया कि घर में वह उपेक्षित और प्रताड़ित हैं और बोझ बनकर जी रही हैं। लेकिन दशरथ बाबू की छठी इंद्रिय ने दुख का संस्पर्श कर लिया था। उन्होंने अनुभव किया कि जिन हाथों ने उनका हाथ पकड़ रखा है वे काँप रहे हैं। उन्हें सहारे की जरूरत है। उनका कंठ सिक्त हो उठा-"सुमित्रा, क्या दुख है?"

जाने क्यों, उनकी आँखों के सामने पत्नी की छवि कौंध गई।

"कोई सुख नहीं है। आपकी पत्नी कितनी सौभाग्यवती थीं! स्वर्ग में भी आप का अभाव उन्हें खलता होगा। आपकी बहू निनी··· लक्ष्मी है। मेरे घर में भी एक बहू है··· हाय! नागफनी है। जाने क्या सुनकर बहू ने बेटे के कान भरे हैं। हमारी उम्र क्या इश्क लड़ाने की है? मेरी कोख का जाया मेरा बेटा कहता है, मैं बूथ पर इश्क लड़ाने जाती हूँ अब मैं क्या कहूँ कि काँटे कहाँ-कहाँ चुभते हैं! मेरे मालिक के गुजर जाने के बाद से बहू ने मेरे लिए घर को नरक बना दिया है। किसी वृद्धा आश्रम में···।"

सुमित्रा की कातरता दशरथ बाबू को बेध गई। दो क्षण सोच कर उन्होंने पूछा- "वृद्धा आश्रम का खर्च क्या तुम्हारा बेटा दे सकेगा?"

"नहीं! वे लोग···"

दशरथ बाबू ने सोचा, सुमित्रा ने उन पर इतनी निर्भरता के विश्वास का अधिकार कहाँ से प्राप्त कर लिया उन्होंने पहली बार अगाध निकटता का अनुभव किया। उन काँपते हाथों को अपने दाहिने हाथ से दबाते हुए उन्होंने आश्वस्त किया-- "देखो, मैं क्या कर सकता हूँ!"

अशोक के झुके-झुके पत्ते हौले-हौले हिल रहे थे। प्रकाश झिलमिल-झिलमिल काँप रहा था। उस कम्पित प्रकाश में दोनों ने जिस दृष्टि से एक-दूसरे को देखा, उस दृष्टि को चौंध से भरता टार्च का प्रकाश आया। टार्च सुमित्रा के बेटे के हाथ में था। टार्च का हाथ सुमित्रा के सिर पर पड़ा। सुमित्रा सिर थाम कर वहीं बैठ गईं। दशरथ बाबू स्तम्भित खड़े रहे। सुमित्रा को उनका बेटा घसीटता हुआ लिए जा रहा था।

रात को शुभेंदु जागा, तो उसने देखा कि पिता जी के कमरे की रोशनी जल रही है और पिताजी लेटे हैं, शायद सो रहे हैं। उसने रोशनी बुझा दी। दशरथ बाबू बोले--"कौन? शुभेंदु?"

"आप सोए नहीं, पिताजी?"

दशरथ बाबू ने उठकर बैठते हुए कहा-- "बत्ती जला दो और यहाँ आओ।"

रोशनी कमरे में फैल गई। शुभेंदु ने पलंग के पास आ कर पूछा- "क्या बात है, पिताजी?"

जरा-सी चुप्पी के बाद दशरथ बाबू ने स्थिर कंठ से कहा- "मुझे पेंशन के बत्तीस सौ रुपये मिलते हैं। ये रुपये मैं घर में देता रहा हूँ। उसमें से मैं ढाई हज़ार रुपये किसी दूसरी मद में खर्च करना चाहता हूँ।"

शुभेंदु बोला- "आप स्वतंत्र हैं। इसमें मुझे कहने-सुनने का सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"अभी परिवार तुम चलाते हो, इसलिये सूचित करना उचित था।"

दूसरी सुबह शुभेंदु ही मिल्कबूथ पर गया। लौटा, तो वह निनी से धीरे-धीरे कुछ कह रहा था। दशरथ बाबू ने पूछा- "क्या है, शुभेंदु?"

शुभेंदु टाल गया- "कुछ नहीं, पिताजी, कुछ भी नहीं!"

लेकिन निनी जब चाय लेकर आई, तो वह बोले- "आज भी अच्छा नहीं लग रहा, बहू! चाय ले जाओ।"

तब निनी उनके सिराहने के पास आ खड़ी हुई। बोली-"वो, जो कल रात को यहाँ आई थीं, खुली गैस के कारण उनके रसोईघर में आग लग गई। उस समय वह रसोईघर में ही थीं।"

दशरथ बाबू की आखें जाने क्या देखती रहीं। भरे कंठ से बोले-"बहू! आदमी को तो एक दिन जाना ही होता है। आदमी चला जाता है। समय चलता रहता है। यही गति है। लेकिन सारी नि:शेषता के साथ कुछ समय होता है, जो शेष रह जाता है।"

निनी को लगा, पिताजी को अभी एकांत और अकेलापन चाहिए। वह चाय की प्याली लिए निकल गई।

(समाप्त)

* आजकल के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

रक्षा-बंधन (५ अगस्त), श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (१४ अगस्त), भारतीय स्वतंत्रता-दिवस की वर्षगाँठ (१५ अगस्त), रमज़ान का आरम्भ (२२ अगस्त), गणेश-चतुर्थी (२३ अगस्त), नवरात्रि व दुर्गा-पूजा (१९-२७ सितम्बर), ईद (२० सितम्बर)।

सूचनाएँ

१. महफ़िल-नाइट (शुक्रवार, २१ अगस्त) **स्थान** - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल। **समय**- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक। सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है।

अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२. इण्डियन सोसायटी आफ़ ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित **गणेशोत्सव मेला** (रविवार, २३ अगस्त) **स्थान** - निकल्सन स्ट्रीट मॉल, चैम्बर्स स्ट्रीट व मैडर्न स्क्वायर, फ़ुट्स्क्रे

अधिक जानकारी के लिये इण्डियन सोसायटी आफ़ ऑस्ट्रेलिया को (०४३३) ८२०-७०१ अथवा (०४३३)५६७-४९५ पर फ़ोन कीजिये या निम्नलिखित वेबसाइट देखिये- www.isoa.org.au

३. मेल्बर्न मराठी मण्डल द्वारा आयोजित **श्री गणेश चतुर्थी उतसव** (रविवार, २३ अगस्त) **स्थान** - सीफ़ोर्ड कम्युनिटी सेन्टर (सी फ़ोर्ड में सीफ़ोर्ड तथा ब्राउटन स्ट्रीट के नुक्कड़ पर; मेल्वे संदर्भ - ८९ डी-३) **कार्यक्रम** - २.२० बजे -भजन, ३.३०-४ बजे तक- गणेश मोदक हवन, ४.३० बजे- आरती, ५.०० बजे - मूर्ति-विसर्जन तथा प्रसाद अधिक जानकारी के लिये पंडित पाटिल को (०४०३) ६७८-५१३ अथवा बिशन महाराज को (०४११) ४०८-४१२ पर फ़ोन कीजिये।

४. संकट मोचन महोत्सव (शनिवार २९ अगस्त) **स्थान** - सी०सी० आडीटोरियम, ४४-६० जैकसन् रोड, मलग्रेव**समय** - सुंदर कांड तथा हनुमान अष्टक पाठ (दोपहर ३.३० बजे से सायंकाल ७.३० बजे तक), प्रसाद (७.३० बजे से ८.३० बजे तक) अधिक जानकारी के लिये योगेन लक्ष्मण को (०४०३) ३३७ १४२ अथवा अरविन्द श्रीवास्तव को (०४१२) ७५३ ७६३ पर फ़ोन करें। प्रवेश नि:शुल्क है परन्तु भोजन-प्रबंधन के लिये, अपने सम्मिलित होने की सूचना १७ अगस्त तक अवश्य दे दें।

अब हँसने की बारी है

१. बस, टैक्सी और बचत

रमेश (सुरेश से) - यार, आज मैंने बस के पीछे दौड़ कर तीन रुपये बचा लिये।

सुरेश (रमेश से) - क्या यार, बहुत मूर्ख हो, टैक्सी के पीछे भागते तो कम से कम सौ रुपये बचाते।

२. बेटा, बाप और बचत

बेटा (बाप से) - पापा आपको याद है आपने कहा था कि अगर तुम पास हो गये तो तुम्हें ५,००० रुपये दूँगा।

बाप (बेटे से) - हाँ बेटा, मुझे अच्छी तरह याद है।

बेटा (बाप से) - पापा, आपके लिये एक अच्छा समाचार है, आपके ५,००० रुपये बच गये।